Research Paper Journalism

अखबारों का हिन्दी भाषा के क्षेत्र में अवदान

Dr.Subodh Kumar | संयोजक, पत्रकारिता विभाग वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

ABSTRACT

यह सच है कि भाषा के विकास में मीडिया की भूमिका काफी महत्वपूर्ण मानी जाती है और यह भी देखने को मिलता है कि भाषा को भ्रष्ट बनाने में भी मीडिया का योगदान रहता है। देश की जनता का सीधा संवाद मीडिया से होता है और हर बार उसे एक जैसी भाषा या शब्दों से रूबरू होना पड़े तो जनता भी ऐसे प्रयोगों की आदी हो जाती है। अगर भाषा का सही और मानकीकृत रूप हमारे सामने आता है तो इससे लोक भाषा संगठित और सुगठित होती है साथ ही उसमें लगातार निखार भी आएगा। भाषा की अपनी विश्वसनीयता भी बढ़ेगी और लोग उसके प्रयोग में सावधानी बरतेंगे तथा सही चीज का उन्हें गौरवबोध भी होगा। दूसरी ओर, भाषा के विकृत होने से अशुद्ध शब्दों की अनावश्यक भीड़ खड़ी होती रहेगी और मानक रूप न विकसित होने से उसकी शुद्धता भी नहीं रहेगी। परिणाम होगा कि लोगों का भाषा से जुड़ाव घटेगा, नए शब्दों की खोज पर असर पड़ेगा और धीरे-धीरे उसके अपने शब्द विलुप्त होते चले जाएंगे। आजकल मीडिया में ऐसी हिन्दी का रूप विकसित हो रहा है जैसे वह विदेशियों द्वारा लिखी जा रही हो। न व्याकरण की चिंता न अर्थ की परवाह और न ही वाक्य विन्यास में लालित्य। हालांकि भाषा के स्तर पर अंग्रेजी के अखबारों में हिन्दी जैसे झगड़े नहीं हैं। लेकिन यह हिन्दी का दुर्भाग्य है कि उसमें लगातार प्रदूषण बढ़ता जा रहा है और उसे दूर करने की चिंता आज की पीढ़ी में नहीं दिख रही। प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से और पंजाब की राजधानी चंडीगढ़ से प्रकाशित हिन्दी के प्रमुख अखबारों की भाषाई स्थिति का आंकलन किया गया है।

KEYWORDS | हिन्दी भाषा, वर्तनी, वाक्य विन्यास, अनुवाद, वचन आदि।

प्रस्तावना-किसी भी भाषा के उत्थान या पतन के लिए अखबार जिम्मेदार होते हैं। भाषा विकास कर रही है या उसमें कोई विकार आ रहा है, यह अखबारों पर ही निर्भर करता है। लोगों तक अखबारों की ही पहुंच होती है और उसी के आधार पर आम जनमानस भाषा के प्रति अपना लगाव और प्रेम विकसित करते हैं। उत्तर भारत के हिन्दी भाषा-भाषी प्रांतों के प्रमुख राष्ट्रीय अखबारों की भाषा में वह संजीदगी और सफाई नहीं दिखती है जिस पर बहुत गर्व किया जा सके और यह कहा जा सके कि हिन्दी भाषा के मानकीकृत रूप को ये कुछ अखबार सही तरीके से अपना रहे हैं। यूपी में लखनऊ और पंजाब में चंडीगढ़ जैसे स्थानों से निकलने वाले हिन्दी अखबारों ने हिन्दी की जो दुर्गति कर रखी है उससे निश्चित ही किसी भी हिन्दी प्रेमी को ठेस पहुंचना स्वाभाविक ही होगा।

हिन्दी और अंग्रेजी अखबारों की तुलना की जाए तो अंग्रेजी अखबारों में भाषाई तौर पर उतनी गड़बड़ियां नहीं दिखाई देतीं जितनी कि हिन्दी अखबारों में दिखती हैं। यही कारण है कि अंग्रेजी अखबारों को विश्वसनीयता के पैमाने पर खरा समझा जाता है और हिन्दी को लोग हेयदृष्टि से देखने लगते हैं। हिन्दी भाषा को लेकर अखबारों में अराजक स्थिति है।

मीडिया और बाजार का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि देश में हिन्दी अखबारों की प्रसार संख्या करीब सवा दो करोड़ के आसपास पहुंच चुकी जबकि अंग्रेजी के अखबारों का प्रसार लगभग 50 से 60 लाख के बीच है। देश के विज्ञापन बाजार पर पैठ बनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय कंपनियों ने भी हिन्दी अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं का सहारा लिया है। करीब एक लाख 10 हजार के आसपास हिन्दी में अखबार और पत्र-पत्रिकाएं निकल रहे हैं। ऐसे में हिन्दी का दायरा भले ही व्यापक हो रहा है लेकिन भाषाई समृद्धि उसे नहीं हासिल हो पा रही है और इसी पर काम करने की जरूरत है। हम अखबारों को जल्दबाजी में लिखा गया साहित्य कहकर नहीं बच सकते। हमें अपनी लेखनी को नाप-तौलकर चलाना होगा और भाषा से किसी भी स्तर पर किया गया समझौता खतरे में डालने वाला होगा। हिन्दी भाषा के संपादकों और पत्रकारों को अंग्रेजी की तुलना में हीनभावना से निकलना होगा और यह सोचना होगा कि उनकी प्रतिष्ठा हिन्दी भाषा के व्यापक प्रभाव की प्रतिष्ठा से जुड़ी है। जब प्रतिष्ठा का भाव नहीं रहता है तो भाषा का विकास अवरूद्ध हो जाता है। भाषा की अभिव्यंजना कमजोर पड़ने लगती है। अखबार बेहतर भाषा में निकलेगा तो उसकी साख बढ़ेगी। जरूरी नहीं कि डेस्क पर काम करने वाला व्यक्ति भाषा का प्रकांड पंडित हो। हां, उसे सरल भाषा प्रयोग करने का तरीका जरूर आना चाहिए। भाषा में गुणात्मक बदलाव करने की गुंजाइश भी होनी चाहिए। सरकारी विज्ञप्तियों वाली भाषा और संस्कृतनिष्ठ शब्दों से बचाव करना जरूरी होगा, जैसे-संज्ञान, अवर्षण, न्यायोचित, अवस्थापना, ज्ञातव्य, उल्लेखनीय आदि। अब हम उन दिक्कतों का जिक्र करेंगे जिसके कारण हिन्दी भाषा का लचीलापन खत्म हो रहा है। इसमें वर्तनी, वाक्य विन्यास, लिंग-वचन व कारक संबंधी त्रुटियों के अलावा अप्रासंगिक शब्द, अनुवाद, एकरूपता का अभाव तथा अंग्रेजी शब्दों की अनावश्यक भरमार शामिल है।

1. **वर्तनी की अशुद्धियां-** अक्सर ''श्रृंखला और श्रंगार'' जैसे शब्दों को ज्यादातर अखबार गलत ही लिखते हैं।

- ''ममता बनर्जी का नाम गौरव **श्रृंखला** में शामिल।'' (जनसत्ता एक्सप्रेस 3 जुलाई 2002 शहरनामा, पेज-1)
- ''महिलाओं जैसा **श्रंगार** कर फांसी पर झूल गया वकील'' (हिंदुस्तान, 14 जून 2002 पृष्ठ 10)
- ''**दंपती** ने जहर खा लिया। (दैनिक भास्कर चंडीगढ़, 8 मई जून 2009 पृष्ठ 1) **दंपति** सही है। अन्य शब्द जिनका प्रयोग गलत होता है जैसे-अधिग्रहीत, सौहार्द, भृष्टाचार, बुराईयां, भाईयों, बधाईयां, व्यवहारिक, आर्शीवाद, पुर्नवास, प्रष्ठांकित आदि।

2. अक्षरों की गलतियां-

- ''श्रद्धालुओं ने गुरू का लंगर **चखा**''। (स्वतंत्र भारत 16 जून 2002 पृष्ठ 5) 'चखा' की जगह 'छका' होना चाहिए।
- ''दंगों के **भड़नके** के बाद। (राष्ट्रीय सहारा, 16 जून 2002 पृष्ठ 8)'भड़कने' होना चाहिए।
- ''मंदिर की **चहारदीवारी** गिरी (दैनिक जागरण, 5 सितंबर 2000) 'चारदीवारी' होना चाहिए।
- अपने **गिरेहबान** में झांककर देखिए। (दैनिक जागरण, 15 सितंबर 2002, पृष्ठ 2) यहां 'ह' को अनावश्यक जोड़ा गया है। इसके अलावा चाबी को चाभी, प्रेमचंद को प्रेमचन्द्र, सांड को सांड़, कवयित्री को कवित्री खूब लिखा जा रहा है। चंद्रबिंदु का उचित प्रयोग जरूरी है-जैसे- जुआ को **जुआ** ही लिखा जाय। वैसे रिश्तें और मुकदमें को रिश्ते और मुकदमे लिखा जाना चाहिए।

3. वाक्य विन्यास की अशुद्धियां-

- **जिम्मेदार अफसरों** को नौकरी से निकालें। (हिन्दुस्तान, 20 अगस्त 2002 पृष्ठ 2)
- **सोते तेल** की मालिश करने से मच्छर नहीं काटते। (जनसत्ता एक्सप्रेस, 5 जुलाई 2002 पृष्ठ 4) जिम्मेदार अफसरों की जगह दोषी लिखा जाना चाहिए था और ''सोते तेल'' की खोज अखबार वालों ने कब कर दी, पता नहीं।

4. लिंग संबंधी अशुद्धियां-

- 'पुलिसिया उत्पीड़न न बंद हुआ तो आंदोलन छेड़ेगी रालोद'। (जनसत्ता एक्सप्रेस, 23 जून 2002 पृष्ठ 14) यहां 'दल' शब्द पुल्लिंग होता है, ऐसे में छेड़ेगा शब्द उचित होगा।
- दुष्कर्म की शिकार हुई महिला ने। (दैनिक भास्कर, 7 मई 2009 पृष्ठ 1) यहां 'शिकार' शब्द पुल्लिंग है, लेकिन अखबार स्त्रीलिंग बनाकर छाप रहे हैं।

5. वचन संबंधी अशुद्धियां-

- 'ये' क्या किया एकता ने। (हिन्दुस्तान, 14 जून 2002 पृष्ठ 12) यहां **ये** की जगह **यह** होना चाहिए था।
- 'यह' लाइसेंस वितरित किए जाएंगे। (राष्ट्रीय सहारा, 1 नवंबर 2002 पृष्ठ 2) यहां **यह** की जगह **ये** होना था।

6. कारक चिन्ह/विभक्ति संबंधी अशुद्धियां-

- 'जानकारियों को देने के साथ-साथ। (आज, 26 मई 2002 पृष्ठ 9) **को** का प्रयोग अनुचित।
- बच्चे की हर मांग को पूरा करना। (जनसत्ता एक्सप्रेस, 23 जून 2002 पृष्ठ 3 रविवासरीय हम)

7. विभक्ति के अनुसार शब्द बनाने की अशुद्धियां-

- 'एक **भेड़िया** की मौत। (दैनिक जागरण, 16 फरवरी 2001) यहां **भेड़िये** होना चाहिए था।
- प्रेमिका के साथ घूम रहा छात्र **तमंचा** और **हथगोला** समेत गिरफ्तार। (दैनिक जागरण, 2 फरवरी 2001) यहां 'तमंचे' और 'हथगोले' होना चाहिए।
- राजनीति में **महिलाएं** की भागीदारी बढ़ाने के लिए.... (राष्ट्रीय सहारा, 29 जून 2002 पृष्ठ 6) यहां महिलाओं होना चाहिए था।

8. अस्वाभाविक शब्द निर्माण संबंधी अशुद्धियां-

- 'अच्छा एवं **धैर्यतापूर्वक** सुनने वाला बनने का प्रयास किया जाना चाहिए।' (हिन्दुस्तान, 11 नवंबर 2002 नई दिशाएं, पृष्ठ 4)
- **अंधता** दूर करने में मदद मिलेगी। (हिन्दुस्तान, 25 जून 2002 पृष्ठ 13) अंधापन संज्ञा है। इससे आगे और संज्ञा बनाने की जरूरत नहीं है। अब अंधता की तर्ज पर काना और बहरा को **कानता** और बहरता भी बनाया जा सकता है।

9. अस्वाभाविक प्रयोग संबंधी अशुद्धियां-

- 'उन्हें घनघोर मनोवेदना हुई। (दैनिक जागरण, 23 जून 2002 पृ.1)
- 'अधिकांश अमरीकी व्यापारियों के लिए भारत आज भी रहस्यमयी देश है। (जनसत्ता एक्सप्रेस, 29 जून 2002 पृष्ठ 16) पहले रहस्यमय का प्रयोग होता था, अब रहस्यमयी बना दिया।

10. अप्रासंगिक शब्दों के प्रयोग की अशुद्धियां-

- 'अमरीकी स्वाधीनता दिवस पर अभूतपूर्व सुरक्षा। (जनसत्ता एक्सप्रेस, 5 जुलाई 2002 पृष्ठ 7)
- 'परिसर में आवासीय शिक्षक व कर्मचारियों के बच्चों के लिए पार्क व उसमें झूलों की स्थापना। (दैनिक जागरण, 23 जून 2002 पृ.11)

11. शब्दश: अनुवाद संबंधी अशुद्धियां-

- 'मलिहाबाद के कई गांवों को गोद लिया गायत्री परिवार ने। (हिन्दुस्तान, 9 जून 2002 पृ.2) अब गांव को गोद कैसे लेंगे। यहां अपनाना या अपनाया लिखना ज्यादा उचित होगा।
- 'आपराधिक उदासीनता'। (दैनिक जागरण, 1 फरवरी 2001) यह Criminal negligence का अनुवाद

है। हर प्रसंग में Criminal का अर्थ आपराधिक करना उचित नहीं होगा। घोर उदासीनता या घोर लापरवाही ज्यादा स्वाभाविक होगा।

12. अनुवाद संबंधी अशुद्धियां-

- 'मामला बिगड़ता देख विकास पाठक भूमिगत हो गए। (आउट लुक 26 जुलाई 2004 पृ.47) अंग्रेजी के ' अंडरग्राउंड' का यहां पर हिन्दी के अर्थ 'छुप जाने' के चलते प्रयोग होना चाहिए। लेकिन शब्दशः अनुवाद से उसे भ्रमित किया जा रहा है।
- भारत-नेपाल के बच्चों ने अनुभव बांटे। (हिन्दुस्तान, 9 अक्तूबर 2004 पृ.12) अनुभव कोई प्रसाद या रेवड़ी तो है नहीं जिसे बांटा जाएगा। अनुभव बतलाए या अनुभव सुनाए ज्यादा उचित होता।

13. अंग्रेजी शब्दों की भरमार-

- 'गुड वर्क छिपाएं कि बताएं। (हिन्दुस्तान, 26 अगस्त 2002 पृ.7)
- हमारी स्किल व तकनीक बेहतर। (अमर उजाला, 28 जून 2002 पृ.7)

इसके अलावा और भी कई तरीके की गलतियां हिन्दी अखबारों में हो रही हैं, जिनमें उर्दू अरबी व फारसी के शब्दों के अक्षरों के नीचे बिंदियां लगाना आदि। अब अंग्रेजी के शब्दों में भी बिंदियां लग रही हैं।

निष्कर्ष- समाज में पत्रकारिता और सिनेमा के जरिए ही भाषा के आधार को समझा जा सकता है। अच्छी भाषा के लिए हमें साहित्य की मदद लेनी पड़ती है। लेकिन आपसी बोलचाल के अलावा सामाजिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए पत्रकारिता का सहारा लिया जाता है जिसमें पत्रकार अपनी लेखनी से समाज को आलोकित करने का प्रयास करते हैं। वर्तमान परिवेश पर नजर डाली जाए तो हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कहीं कोई खोट नजर नहीं आती है। वस्तुतः भाषाई दृष्टि से अगर देखा जाए जो बहुत सी कमियां नजर आती हैं और उनका समय रहते निराकरण जरूरी भी है। उपरोक्त उदाहरणों पर गौर करने के बाद यही कहा जा सकता है कि अखबारों की हिन्दी को और बेहतर बनाया जा सकता है। इस पर अखबारों को अपने आंतरिक ढांचे में बदलाव कर काम करने की जरूरत है। कुछ और बिंदुओं पर गौर फरमाने की जरूरत है, वे इस प्रकार हैं-

- अखबार अपने शब्द भंडार को शोध करके बढ़ाएं और उसे लागू करने पर जोर दें। समाज के एक बड़े तबके को सभ्यता और संस्कृति से जोड़ने का काम अखबार करते हैं।
- व्याकरण के गलत प्रयोग से भ्रंश हुई भाषा का लगातार प्रयोग निश्चित रूप से पाठकों को भ्रम में रखने वाला होगा और उन्हें सही शब्दों के चुनाव में दिक्कतें आएंगी।
- भाषा के मानकीकृत रूप पर अगर अखबार नहीं चल पा रहे हैं तो कम से कम वे अपनी आंतरिक शब्दावली को ही विकसित कर लें, जिससे भाषा भ्रष्ट न हो रही हो।
- अखबार अपने डेस्क पर काम करने वाले सहयोगियों को समय-समय पर प्रशिक्षण की भी व्यवस्था करते रहें और अपनी आंतरिक रूप से तैयार की गई शब्दावली तथा भाषा की गाइडलाइंस से उन्हें परिचित कराते रहें।
- ''क्रास चेक'' करने की परिपाटी अखबारों से खत्म हो रही है और जिसके कारण दूसरे दिन अखबारी गलतियां हास-परिहास का कारण बनती हैं।
- पाठकों के ''फीडबैक'' को भी अखबार गंभीरता से लें। आज के तकनीकी युग में जब ''जन पत्रकारिता'' की मांग लगातार जोर पकड़ती जा रही है ऐसे में जन भावनाओं का सम्मान करना भी अखबारों के हित में होगा और उनके सुझावों को गंभीरता से लेना होगा।
- इन दिनों अनुवाद की पत्रकारिता धूम है, लिहाजा इसमें अखबारों को सावधानी बरतनी होगी तथा अनुवाद के बाद स्टोरी और फीचर को बिना ''क्रासचेक'' किए न प्रकाशित करें।

REFERENCES

1. मान आरके, 2013, हिन्दी अखबारों की भाषा, दिल्ली: अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड। | 2. मेहता आलोक, 2011, भारत में पत्रकारिता, दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट। | 3. अग्निहोत्री आरके, खन्ना एएल, 2011, भारत में अंग्रेजी की समस्या, भोपाल: एकलव्य का प्रकाशन।